IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"एकात्म मानववाद और प्रधानमंत्री मुद्रा योजना"

***डॉ. अनिल कुमार**

असिस्टेंट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग, श्री बजरंग पी. जी. कॉलेज, दादर आश्रम, सिकंदरपुर, बलिया, उत्तर प्रदेश

Abstract

किसी भी अर्थव्यवस्था के सर्वांगीण आर्थिक विकास के लिए विकेंद्रीकरण बहुत जरूरी है। अर्थव्यवस्था में जितना अधिक विकेंद्रीकरण होगा, उतना ही अधिक आर्थिक विकास होगा।

एकात्म मानववाद के अंतर्गत पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने विकेंद्रीकरण पर अपने बहुत ही महत्वपूर्ण विचार दिए है। उनके अनुसार विकेंद्रीकरण के द्वारा ही छोटे, लघु एवं कुटीर उद्योगों का विकास किया जा सकता है और इनके द्वारा ही अधिक से अधिक लोगो को रोजगार देकर उनके जीवन स्तर में सुधार किया जा सकता है।

प्रधानमंत्री मुद्रा योजना भी मुख्य रूप से इसी प्रकार के उद्योगों के विकास के लिए लाया गया है जिसका कार्य ही इन्हें आसानी से ऋण के माध्यम से वित्तीय सुविधा प्रदान करना है। इस प्रकार के उद्योगों की मूल समस्या ही वित्तीय अभाव है जिससे इनका विकास नही हो पाता है। मुद्रा योजना द्वारा सरकार इन्हें ऋण प्रदान करके इनके विकास में अपनी भूमिका अदा कर रहा है।

मुद्रा योजना, विकेंद्रीकरण के विचार को ही आगे बढ़ाने का कार्य कर रही है। अर्थव्यवस्था का जितना अधिक विकेंद्रीकरण होगा उतना ही विकास पथ पर अग्रसर होगा।

Key words- एकात्म मानववाद, विकेंद्रीकरण, आर्थिक विकास, प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, गैर कृषि उद्योग, शिशु, किशोर, तरुण, तरुण प्लस।

एकात्म मानववाद-

एकात्म मानववाद दर्शन के प्रणेता पंडित दीनदयाल उपाध्याय है।

"एकात्म मानववाद जो दर्शन है, यह पंडित दीनदयाल उपाध्याय के आत्मिक चिंतन की अभिव्यक्ति है जिसकी जड़ें भारतीय चिंतन के भूत में है परंतु दृष्टि भविष्य पर केंद्रित है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी इस विचारधारा के अंतर्गत आधुनिक राजनीति, अर्थव्यवस्था और समाज रचना के लिए एक बहुआयामी भारतीय पृष्ठभूमि प्रस्तुत किए हैं और यही नहीं बल्कि इस विचारधारा को वर्तमान समय की चुनौतियां एवं समस्याओं के भारत के नजरिए से समाधान के रूप में भी प्रतिपादित किए है, जो पूंजीवाद और साम्यवाद दोनों के ही विकल्प रूप में है।"

दत्तोपंत ठेंगड़ी जी के शब्दों में, "एकात्म मानववाद का दर्शन या विचारधारा इस संसार को पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की श्रेष्ठतम देन है।"

व्यष्टि का समष्टि में और समष्टि का व्यष्टि में समन्वय ही एकात्म मानववाद है।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के आर्थिक विचार -

पंडित दीनदयाल उपाध्याय अपने आर्थिक विचार मुख्यत: कृषि, उद्योग व विकेंद्रीकरण, विदेशी व्यापार, नियोजन व ग्रामीण विकास, स्वदेशी, अंत्योदय और अर्थायाम जैसे आदि बिंदुओं पर दिए हैं।

विकेंद्रीकरण-

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी अपने औद्योगिक विचार के अंतर्गत सबसे अधिक फोकस विकेंद्रीकरण पर किए।

पंडित दीनदयाल जी का मानना था कि जिस तरह देश में लोकतंत्र का विकेंद्रीकरण है उसी तरह देश में अर्थव्यवस्था का भी विकेंद्रीकरण होना चाहिए। जिस तरह लोकतंत्र में लोगों को वोट देने का अधिकार होता है उसी तरह अर्थव्यवस्था में भी लोगों को अपने काम को चुनने की आजादी होनी चाहिए।

पंडित दीनदयाल जी का मानना था कि हमारे देश के प्रकृति के अनुसार सबसे महत्वपूर्ण छोटे -छोटे लघु उद्योग एवं कुटीर उद्योग हैं। भारी व बड़े उद्योगों में निवेश करने की अपेक्षा सरकार को सबसे अधिक फोकस इन छोटे लघु उद्योग और कुटीर उद्योग पर करना चाहिए जो रोजगार की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण उद्योग हैं। भारी व बड़े उद्योग जहां अधिक पूंजी वाले होते हैं वही वह बहुत कम रोजगार भी देते हैं और तकनीकी युक्त होते है।

रोजगार, आर्थिक समानता और सामाजिक न्याय हेतु हमारे देश के लिए केवल भारी उद्योग पर निवेश करना उचित नहीं है। पंडित दीनदयाल जी, ऐसा नहीं है कि वह बड़े उद्योगों का विरोध करते हैं बल्कि उनका यह मानना है कि, महत्वपूर्ण वस्तुओं का निर्माण बड़े उद्योग में हो जैसे मोटर गाड़ी, रक्षा उपकरण आदि। उसके बाद अधिक से अधिक उत्पादन छोटे, लघु एवं कुटीर उद्योगों से होना चाहिए क्योंकि हमारा देश श्रम प्रधान है और पूजी की कमी भी है। इन छोटे लघु उद्योगों में अधिक से अधिक लोगों को रोजगार मिल जाता है।

पंडित दीनदयाल जी अपने विकेंद्रीकरण विचार के अंतर्गत चाहते थे कि छोटे लघु कुटीर उद्योगों पर अधिक से अधिक निवेश किया जाए इसका अधिक से अधिक प्रसार किया जाए जिससे अधिक लोगों को रोजगार मिलेगा, रोजगार मिलेगा तो उनका आय बढ़ेगा और आय बढ़ने से उनके जीवन की गुणवत्ता बढ़ेगी और वे लोग विकास की मुख्यधारा से जुड़ सकेंगे और सही मायने में आर्थिक विकास होगा।

1961 के जुलाई माह में एक परिचर्चा में भारत के प्रमुख अर्थशास्त्री एवं योजना आयोग के भूतपूर्व उपाध्यक्ष डॉक्टर धनंजयराव गाडगिल ने भी यही विचार दिए कि भारत में उद्योगों का विकेंद्रीकरण करना होगा। उनको बड़े क्षेत्र में फैलाना होगा, उपभोग सामग्री के कारखाने विकेंद्रीकरण पद्धति से ग्रामीण अंचल में खोलने होंगे।

वर्तमान में यदि देश का समुचित विकास करना है तो बड़े उद्योगों के साथ छोटे, लघु एवं कुटीर उद्योगों को भी बढ़ावा देना होगा। छोटे-छोटे उद्योगों से, लघु व कुटीर उद्योगों से अधिक से अधिक लोगों को रोजगार मिलेगा।

प्रधानमंत्री मुद्रा योजना-

प्रधानमंत्री मुद्रा योजना 8 अप्रैल, 2015 को भारत के प्रधानमंत्री द्वारा नई दिल्ली में शुरू की गई थी। यह एक केंद्र सरकार की महत्वकांक्षी योजना है।

प्रधानमंत्री मुद्रा योजना (PMMY) में भारत सरकार द्वारा छोटे व्यवसायों के लिए और उद्यमियों को 10 लाख रुपये तक का ऋण प्रदान किया जाता है। इस योजना द्वारा गैर-कॉर्पोरेट, गैर-कृषि सूक्ष्म और लघु उद्यमों को वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है, जिसमें विनिर्माण, व्यापार और सेवा क्षेत्रों से संबंधित गतिविधियाँ शामिल हैं। प्रधानमंत्री मुद्रा योजना में ऋण तीन श्रेणियों में उपलब्ध है।

1. शिशु (₹50,000 तक)
2. किशोर (₹50,000 से ₹5 लाख तक)
3. तरुण (₹5 लाख से ₹10 लाख तक)।

हाल ही में सरकार द्वारा उन लोगों के लिए जिन्होंने सफलतापूर्वक 'तरुण' ऋण को चुका दिया है, उनके लिए 20 लाख रुपये तक की नई 'तरुण प्लस' श्रेणी की ऋण सेवा भी शुरू की गई है।

प्रधानमंत्री मुद्रा योजना की प्रमुख बातें-

उद्देश्य- इस योजना का उद्देश्य छोटे, लघु और सूक्ष्म उद्यमों को वित्तीय सहायता प्रदान करके उद्यमिता को बढ़ावा देना है।

पात्रता- यह योजना गैर-कॉर्पोरेट, गैर-कृषि छोटे और सूक्ष्म उद्यमों पर ध्यान देता है। इस योजना में दुकानदार, फल बेचने वाले, सब्जी विक्रेता, ट्रक ऑपरेटर, कारीगर और मरम्मत की दुकानों जैसे विभिन्न व्यवसाय शामिल हैं।

ऋण की गारंटी- यह योजना आम तौर पर 10 लाख रुपये तक के ऋण के लिए किसी भी प्रकार की गारंटी की मांग नहीं करता है।

ऋण श्रेणियाँ- इस योजना में तीन प्रकार की ऋण श्रेणियां है जो इस प्रकार है।- **शिशु-** 50000 रुपये तक के ऋण।

किशोर- 50001 रुपये से 5 लाख रुपये तक के ऋण।

तरुण- 5 लाख रुपये से 10 लाख रुपये तक के ऋण।

तरुण प्लस- 10 लाख रुपये से 20 लाख रुपये के बीच का ऋण। यह ऋण उन लोगों के लिए है जो पहले 'तरुण' श्रेणी के तहत ऋण चुका दिया है।

ऋणदाता- इस योजना में बैंकों और अन्य ऋण देने वाले संस्थानों द्वारा मुद्रा (MUDRA) के माध्यम से ऋण दिए जाते हैं।

पात्र गतिविधियाँ- विनिर्माण कार्य जैसे कपड़े बनाना, खाद्य प्रसंस्करण आदि। व्यापार कार्य जैसे दुकान और सेवा उद्यम। सेवा कार्य जैसे मरम्मत की दुकानें और खाद्य स्टॉल। कृषि-संबद्ध कार्य जैसे मुर्गी पालन, मधुमक्खी पालन आदि।

लाभार्थी- इसमें युवा, कुशल और महिला उद्यमी शामिल हैं।

विकेंद्रीकरण और मुद्रा योजना- पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार विकेंद्रीकरण के द्वारा ही देश मे छोटे, लघु व कुटीर उद्योगों को बढ़ावा दिया जा सकता है और विकेंद्रीकरण से ही अर्थव्यवस्था में व्यापक स्तर पर लोगों को रोजगार मुहैया कराया जा सकता है। रोजगार के माध्यम से लोगों के जीवन स्तर में सुधार कर विकास की मुख्य धारा से जोड़ा जा सकता है।

वर्तमान में भी देश के सर्वांगीण विकास के लिए विकेंद्रीकरण बहुत जरूरी है। इस लिहाज से देखा जाय तो भारत सरकार द्वारा जारी प्रधानमंत्री मुद्रा योजना बहुत ही सराहनीय योजना है।

यह योजना मुख्य रूप से छोटे, लघु व कुटीर उद्योग को ही वित्तीय सहायता प्रदान करता है। इस प्रकार के उद्योगों का सबसे बड़ी समस्या वित्त की कमी है और यह योजना इन उद्योगों को वित्त की कमी की समस्या को ऋण प्रदान कर दूर करने का प्रयास करता है।

मुद्रा योजना विशेष रूप से ग्रामीण और अर्द्ध-शहरी क्षेत्रों में स्वरोजगार को प्रोत्साहित किया है, जिससे लघु व्यवसाय, विकास तथा रोजगार सृजन को बढ़ावा मिला है।

निष्कर्ष-

विकेंद्रीकरण का विचार और मुद्रा योजना का अध्ययन करने पर यह कहा जा सकता है कि मुद्रा योजना कहीं न कहीं अर्थव्यवस्था में विकेंद्रीकरण की विचारधारा और विकेंद्रीकरण को ही बढ़ावा दे रहा है। ऋण प्रदान कर लोगों को रोजगार का अवसर दिया जाने में, आय का स्तर बढ़ाने में, लोगों को विकास की मुख्य धारा से जोड़ने में और आर्थिक विकास को बढ़ाने में, इस उद्देश्य से यह योजना सफल है।

संदर्भ-

1. पंडित दीनदयाल उपाध्याय, "एकात्म मानववाद" सुरुचि प्रकाशन, दिल्ली, 1985, पेज -60.
2. डी. पी. ठेंगड़ी, "एकात्म मानव दर्शन" सुरुचि प्रकाशन, दिल्ली, 1970, पेज-36.
3. "पंडित दीनदयाल उपाध्याय- विचार दर्शन" सात खंड, सुरुचि प्रकाशन, दिल्ली, 1986, पेज-1000.
4. पंडित दीनदयाल उपाध्याय, "भारतीय अर्थनीति -विकास की एक दिशा" सुरुचि प्रकाशन, दिल्ली।
5. श.अ. कुलकर्णी, "एकात्म अर्थनीति- खंड चार" सुरुचि प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014.
6. transformingindia.mygov.in
7. sbi.co.in
8. www.mudra.org.in
9. दैनिक समाचार पत्र।